दर्शनशास्त्र विभाग

> दर्शनशास्त्र के सभी छात्र-छात्राएं मेरे Mob. no./WhatsApp no. — '9431449951' के माध्यम से पाठ्यक्रम के विषय-वस्तु संबंधी विस्तृत जानकारी मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं।
>
> — डॉ० सुनील कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष,
> दर्शनशास्त्र विभाग

भारतीय दर्शन

* ⇒ दर्शन : भारतीय दृष्टि में (परिभाषा और शाब्दिक अर्थ)

→ भारतीय दार्शनिक परम्परा में 'फिलॉसफी' को 'दर्शन' कहा जाता है।

→ शाब्दिक अर्थ :- 'दर्शन' शब्द संस्कृत भाषा के 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - देखना अर्थात् साक्षात् ज्ञान प्राप्त करना। इस रूप में दर्शन का तात्पर्य है - जिसके द्वारा देखा जाये अथवा साक्षात्कार किया जाये (दृश्यते अनेन इति दर्शनम्)। इस साक्षात ज्ञान को ही भारतीय परम्परा में तत्त्वज्ञान कहा जाता है।

→ साधारणतः देखने का आशय चक्षु इन्द्रिय द्वारा देखने या ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान लिया जाता है परन्तु यहाँ 'देखना' का आशय दिव्य चक्षु, ज्ञान चक्षु या प्रज्ञा-चक्षु द्वारा सूक्ष्म आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना है।

→ परिभाषा :- भारतीय दार्शनिक और दार्शनिक सम्प्रदाय परमतत्त्व के साक्षात्कार को ही दर्शन मानते हैं।

→ वस्तुतः युक्तिपूर्वक तत्त्व ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है।

~~* → भारतीय दर्शन का स्वरूप :~~

→ दर्शनशास्त्र के मुख्यतः तीन शाखा है - तत्त्वमीमांसा, ~~ज्ञानमीमांसा~~ ज्ञानमीमांसा और आचारमीमांसा।

→ तत्त्वमीमांसा :- मूलतत्त्व के संख्या और स्वरूप का अध्ययन करने वाला ~~आधार~~ शाखा तत्त्वमीमांसा है।

→ ज्ञानमीमांसा :- तत्त्वों के ज्ञान प्राप्ति के साधन, ज्ञान के स्वरूप, उसकी प्रामाणिकता, ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान की विवेचना करनेवाला शाखा ज्ञानमीमांसा है।

→ नीतिशास्त्र :- परम लक्ष्य प्राप्ति हेतु मानवीय आचरण के नैतिक विज्ञान, जो कर्मों के औचित्य का मापदण्ड प्रस्तुत करता है, वह ~~शाख~~ शाखा नीतिशास्त्र है।

⇒ भारतीय दर्शन का स्वरूप :-

→ यद्यपि भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदाय का उद्भव और विकास विभिन्न काल एवं परिस्थिति में हुई है तथापि भारत देश के साझी संस्कृति में उत्पन्न होने के कारण इसका स्वरूप स्पष्ट एवं सामान्य है।

→ भारतीय दर्शन का उद्भव जिज्ञासा मात्र से नहीं अपितु व्यावहारिक समस्या से हुई है। यह समस्या है - जीवन और जगत में व्याप्त असीम दुःख से छुटकारा पाना। फलतः ~~भारतीय दर्शनों~~ भारत के सभी दार्शनिक सम्प्रदायों का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है अर्थात् दुःख का आत्यन्तिक क्षय।

→ प्रत्येक दर्शन का लक्ष्य मोक्ष है और उसके प्राप्ति हेतु दिये गये उपाय मोक्ष-मार्ग ; जैसे - बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग, जैन का त्रिरत्न, योग का अष्टांग योग आदि।

→ मोक्ष मार्ग वस्तुतः एक विशेष जीवन-पद्धति है जिसके अनुरूप आचरण कर व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

→ इस प्रकार भारतीय दर्शन का स्वरूप आशावादी है। यह स्वीकार करता है कि जीवन दुःखमय है परन्तु इससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इससे मुक्ति का उपाय है।

→ भारतीय दर्शन का स्वरूप लोककल्याणवादी है, पलायनवादी नहीं। यहाँ जगत से आसक्ति छोड़ने की बात कही गयी है, जगत को छोड़ने (पलायन) की नहीं। बोधिसत्व, जीवनमुक्त, स्थितप्रज्ञ - सदैव लोक-कल्याण में संलग्न रहते हैं।

→ भारतीय दर्शन का स्वरूप मूलतः आध्यात्मवादी है, भौतिकवादी नहीं। यहाँ परमतत्व के रूप में भौतिक तत्व को न स्वीकार कर आत्म तत्व को स्वीकार किया गया है ; अतीन्द्रिय एवं पारलौकिक सत्ता में विश्वास किया गया है।

→ भारतीय दर्शन का स्वरूप समन्वयात्मक है, विश्लेषणात्मक नहीं। यहाँ जीवन और जगत के विभिन्न पक्षों को खण्डित रूप, जैसे - प्रमाणमीमांसा, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि में न करके समग्र रूप में किया जाता है।

→ इस प्रकार भारतीय दर्शन का स्वरूप एक ऐसे दर्शन के रूप में स्थापित होती है जो मानवीय समस्या का व्यावहारिक समाधान कर उसके दिव्यता को उभारकर ~~ईश्वरत्व~~ ईश्वरवत बना देने की आध्यात्मिक और अनुशासित प्रणाली की है।

* ⇒ फिलॉसफी : पाश्चात्य दृष्टि में (परिभाषा और शाब्दिक अर्थ)

→ पाश्चात्य दर्शन में दर्शनशास्त्र का समानार्थी शब्द Philosophy (फिलॉसफी) का प्रयोग किया जाता है, हालाँकि दोनों के मौलिक अर्थ में पर्याप्त भिन्नता है।

→ 'Philosophy' शब्द दो ग्रीक शब्दों 'Philos' और 'Sophia' के संयोग से बना है। 'Philos' का अर्थ है - प्रेम (Love) या अनुराग तथा 'Sophia' का अर्थ है - ज्ञान या विद्या (wisdom)। इस प्रकार फिलॉसफी का शाब्दिक अर्थ है - ज्ञान के प्रति प्रेम (Love of wisdom)। यहाँ ज्ञान का आशय सत्य के ज्ञान से है।

→ फिलॉसफी की उत्पत्ति जिज्ञासा से हुई है फलतः पाश्चात्य दार्शनिक जीवन और जगत के संदर्भ में अपनी दृष्टि को प्रस्तुत कर जिज्ञासा की संतुष्टि करता है।

→ जिज्ञासा संतुष्टि ही लक्ष्य है ~~क~~ फलतः विचार के अनुरूप आचरण का महत्त्व नहीं अर्थात् पाश्चात्य दार्शनिक का कोई विशेष जीवन पद्धति नहीं।

→ फिलॉसफी (पाश्चात्य चिन्तन) में बुद्धि का महत्त्व अधिक है तथा आध्यात्मिक अनुभूति का कम।

→ जिज्ञासा संतुष्टि के कारण प्रत्येक दर्शन अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों के मत की समीक्षा करता है और अपना मत जीवन और जगत के सन्दर्भ में प्रस्तुत करता है।

→ इस प्रकार फिलॉसफी (पाश्चात्य चिन्तन) का विकास ~~खंडन-मंडन~~ खंडन-मंडन के फलस्वरूप हुआ है।

* ⇒ भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन में अन्तर :-

भारतीय दर्शन	पाश्चात्य दर्शन
1) भारतीय दर्शन का उद्भव व्यावहारिक समस्या से हुई है। यह समस्या है - जीवन और जगत में व्याप्त असीम दुःख से छुटकारा पाना	पाश्चात्य दर्शन का उद्भव ~~बौद्धिक~~ बौद्धिक असंतोष अर्थात् बौद्धिक जिज्ञासा के कारण हुआ है। यह जिज्ञासा है - सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई?
2) दुःख का पूर्ण विनाश अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करना जीवन का परम लक्ष्य है।	जीवन और जगत के ~~संबंध में~~ संदर्भ में अपनी दृष्टि प्रस्तुत कर बौद्धिक संतोष अर्थात् जिज्ञासा की संतुष्टि ही ~~सद~~ लक्ष्य है।

3) भारतीय दार्शनिक अपने दर्शन के अनुसार जीवन में आचरण करते हैं।	पाश्चात्य दार्शनिक अपने दर्शन के अनुसार जीवन में आचरण के लिये बाध्य नहीं।
4) सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति हेतु एक विशेष जीवन-पद्धति की प्रस्तुति	पाश्चात्य दार्शनिक कोई विशेष जीवन-पद्धति या मार्ग का निर्माण नहीं करते।
5) आध्यात्मिक अनुभूति का महत्व अधिक है; यह अलौकिक न होकर अतिलौकिकता से संबंधित है।	बुद्धि का महत्व अधिक है, ~~आत्मा~~ आध्यात्मिक अनुभूति का कम।
6) भारतीय दर्शन व्यावहारिक है।	पाश्चात्य दर्शन सैद्धान्तिक है।
7) इसकी पद्धति समन्वयात्मक एवं विश्लेषणात्मक है, यहाँ सत्य का विवेचन समग्र रूप में किया गया है।	इसकी पद्धति विश्लेषणात्मक है, यहाँ सत्य को खंडित कर समझने का प्रयास किया गया है।
8) आध्यात्मवाद, पारलौकिक जीवन तथा धार्मिक ज्ञान पर विशेष बल।	भौतिकवाद, इहलोकवाद, वैज्ञानिक ज्ञान पर विशेष बल।
9) भारतीय दर्शन के विभिन्न संप्रदाय हैं और दार्शनिक किसी विशेष संप्रदाय से जुड़े होते हैं।	पाश्चात्य दर्शन में सभी दार्शनिकों का स्वतंत्र दर्शन है।
10) भारतीय दर्शन में ~~तत्वमीमांसा~~ के विभिन्न संप्रदायों में तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं आचारमीमांसा का समन्वय देखा जा सकता है।	पाश्चात्य दर्शन में ऐसी बात नहीं।

* => भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ :-

यद्यपि विभिन्न भारतीय दर्शनों की उत्पत्ति विभिन्न कालों एवं परिस्थितियों में हुई है फिर भी एक ही देश में उत्पन्न होने के कारण उन पर भारतीय संस्कृति की छाप दिखाई देती है। परिणामस्वरूप उनमें कुछ समानता भी दिखाई देती है। इस समानता को भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताओं के रूप में जाना जाता है —

(1) संसार दुःखमय है — सभी दार्शनिक स्वीकार करते हैं कि विश्व दुःखों से भरा हुआ है, कोई भी जीव इससे अछूता नहीं है। परन्तु इसे भारतीय दार्शनिक नियति (भवितव्यता) नहीं स्वीकारते बल्कि दुःख से मुक्ति का मार्ग भी बतलाते हैं। (अपवाद - चार्वाक)

(2) आत्मा की सत्ता में विश्वास :- सभी दार्शनिक जीवन के सातत्य के रूप में शरीर से पृथक एक शाश्वत, नित्य, निराकार, निरवयव आत्मा

की सत्ता को स्वीकार ~~करती~~ करते हैं (अपवाद - चार्वाक)। यहाँ का मूलमंत्र है - 'आत्मानं विद्धि' अर्थात् स्वयं को जानो।

(3) कर्म-सिद्धान्त :- सभी दर्शन कर्म सिद्धांत में विश्वास करते हैं। कर्म नियम के अनुसार अच्छे कर्मों का अच्छा और बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य मिलता है। किये गये कर्म का फल नष्ट नहीं होता, बिना किये गये कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता (कृतप्रणाश और अकृताभ्युगम)। अपवाद-चार्वाक

(4) पुनर्जन्म :- सभी दार्शनिक यह स्वीकारते हैं कि शरीर के मृत्यु के बाद आत्मा नया ~~जन्म~~ शरीर धारण कर लेता है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त कर्म-नियम और आत्मा की अमरता से ही प्रस्फुटित है। आत्म साक्षात्कार के बाद अर्थात् मोक्ष के उपलब्ध होने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता। अपवाद-चार्वाक

(5) अज्ञान :- सभी दार्शनिक मानते हैं कि अज्ञान या अविवेक ही सभी दुःखों का मूल कारण है। अज्ञान के कारण मनुष्य विभिन्न योनियों में जन्म-जन्मान्तर तक भटकते रहता है। (अपवाद - चार्वाक)।

(6) ज्ञान एवं सम्यक प्रयास :- सभी दार्शनिक अज्ञान का नाश ज्ञान या सम्यक प्रयास द्वारा मानते हैं। तत्वज्ञान विवेकज्ञान कोई ~~बौद्धिक ज्ञान नहीं~~ सविकल्प बौद्धिक ज्ञान नहीं अपितु निर्विकल्प प्रज्ञा है। (अपवाद - चार्वाक)

(7) ~~मोक्ष:~~ सभी दार्शनिक मोक्ष की सत्ता में विश्वास करते हैं। मोक्ष दुःख रहित एवं आनन्दपूर्ण अवस्था है जिसकी प्राप्ति इस जन्म में सम्यक मार्ग द्वारा संभव है। मोक्ष के दो प्रकार हैं - जीवनमुक्ति और विदेह मुक्ति। मोक्ष प्राप्ति के बाद कर्म का क्षय हो जाता है और पुनर्जन्म नहीं होता।

(8) जीवन दर्शन :- प्रत्येक भारतीय दार्शनिक एक जीवन पद्धति को बतलाती है जिसके अनुरूप आचरण कर सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

(9) धर्म और दर्शन का ~~साम~~ समन्वय :- भारतीय दार्शनिकों ने धर्म एवं दर्शन में समन्वय स्थापित किया है। यहाँ दोनों का लक्ष्य एक है - जीवन के दुःखों से छुटकारा पाना। दर्शन का आधार है तर्क तथा धर्म का आधार आस्था। भारतीय दर्शन में धर्म के आस्था को तर्क की ~~कसौटि~~ कसौटी पर उतारकर प्रस्तुत किया गया है।

Scanned with CamScanner

4 * ⇒ भारतीय दर्शन का वर्गीकरण / सम्प्रदाय

भारत के दार्शनिक सम्प्रदायों को मुख्यतः दो आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है - (A) वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करने के आधार पर और (B) ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के आधार पर।

(A) वेद के प्रामाणिकता स्वीकार करने के आधार पर भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं - वैदिक और अवैदिक।

→ वैदिक सम्प्रदाय का आशय उनसे है कि जो वेदों (श्रुतियों) की प्रामाणिकता को स्वीकार करता है। इसे आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है।

→ वैदिक (आस्तिक) दर्शनों की संख्या छः है इसलिये इसे सम्मिलित रूप से 'षड्दर्शन' भी कहा जाता है। ये हैं - ~~न्याय~~ 1. न्याय, 2. वैशेषिक, 3. सांख्य, 4. योग, 5. मीमांसा और 6. वेदान्त। इनमें भी मीमांसा और वेदान्त शुद्ध रूप से वैदिक दर्शन है। ~~मीमांसा~~ जो वेद की क्रमशः कर्मपरक ~~एवं~~ और ज्ञानपरक व्याख्या करता है। 'मीमांसा' को 'पूर्वमीमांसा' और 'वेदान्त' को 'उत्तर मीमांसा' भी कहा जाता है।

→ अवैदिक सम्प्रदाय का आशय उनसे है कि जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते। इसे नास्तिक दर्शन भी कहा जाता है।

→ अवैदिक (नास्तिक) दर्शनों की संख्या तीन है। ये हैं - 1. चार्वाक, 2. बौद्ध और 3. जैन।

(B) ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के आधार पर भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं - ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी।

→ ईश्वरवादी सम्प्रदाय का आशय है कि जो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है। ये चार हैं - न्याय, वैशेषिक, योग और वेदान्त।

→ अनीश्वरवादी सम्प्रदाय से आशय है जो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। ये पाँच हैं - सांख्य, मीमांसा, चार्वाक, बौद्ध और जैन।

⇒ आस्तिक और नास्तिक :-

→ आस्तिक और नास्तिक वस्तुतः भारतीय दर्शन का दो सम्प्रदाय है। इसके विभाजन का आधार वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार या अस्वीकार करना है।

→ जो सम्प्रदाय वेद की प्राम प्रामाणिकता को स्वीकृति प्रदान करता है उसे आस्तिक जबकि जो सम्प्रदाय वेद की प्रामाणिकता को स्वीकृति प्रदान नहीं करता उसे नास्तिक कहते हैं।

→ आस्तिक-नास्तिक के विभाजन में ईश्वर के अस्तित्व में विचार से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसा संभव है कि कोई सम्प्रदाय आस्तिक हो किन्तु वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करे; जैसे- सांख्य और मीमांसा।

→ आस्तिक दर्शन और उसके प्रवर्तक :-

दर्शन	प्रवर्तक	आधार ग्रंथ
1. न्याय दर्शन	गौतम (गोतम)	न्याय-सूत्र
2. वैशेषिक दर्शन	कणाद	वैशेषिक-सूत्र
3. सांख्य दर्शन	कपिल	सांख्य-सूत्र/सांख्यकारिका
4. योग दर्शन	पतंजलि	योग-सूत्र
5. मीमांसा दर्शन	जैमिनि	मीमांसा-सूत्र
6. वेदान्त	बादरायण	ब्रह्मसूत्र

→ नास्तिक दर्शन और उनके प्रवर्तक :-

दर्शन	प्रवर्तक	आधार ग्रंथ
1. चार्वाक दर्शन	चार्वाक/बृहस्पति	तत्वपप्लवसिंह
2. बौद्ध दर्शन	बुद्ध	त्रिपिटक
3. जैन दर्शन	महावीर	तत्वार्थाधिगम सूत्र

→ नास्तिक शिरोमणि चार्वाक :-

चार्वाक को माधवाचार्य रचित 'सर्वदर्शन संग्रह' में नास्तिक शिरोमणि कहा गया है, ऐसा इसलिये क्योंकि चार्वाक वेद, ईश्वर, आत्मा, परलोक सभी का खण्डन करता है। ध्यातव्य है कि बौद्ध और जैन आत्मा और परलोक के साथ किसी न किसी रूप में ईश्वर को भी स्वीकार कर लेते हैं।

→ आस्तिक दर्शन :-

आस्तिक दर्शन में न्याय एवं वैशेषिक समान तंत्र हैं, न्याय ज्ञानमीमांसा पर जोर देता है जबकि वैशेषिक तत्वमीमांसा पर। इसी प्रकार सांख्य-योग समान तंत्र हैं, सांख्य तत्वमीमांसा का निरूपण करता है जबकि योग आचारमीमांसा का। मीमांसा और वेदान्त भी समान तंत्र हैं, मीमांसा वेद की कर्म-परक व्याख्या करता है जबकि वेदान्त वेद की ज्ञान-परक व्याख्या करता है।

Scanned with CamScanner

भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय

→ **वेद की प्रामाणिकता**

- स्वीकार्य (वैदिक) — आस्तिक
  - न्याय-वैशेषिक
  - सांख्य-योग
  - मीमांसा-वेदान्त
- अस्वीकार्य (अवैदिक) — नास्तिक
  - चार्वाक (नास्तिक शिरोमणि)
  - बौद्ध
  - जैन

→ **ईश्वर का अस्तित्व**

- स्वीकार — ईश्वरवादी
  - न्याय
  - वैशेषिक
  - योग
  - वेदान्त
- अस्वीकार — अनीश्वरवादी
  - सांख्य
  - मीमांसा
  - बौद्ध
  - जैन
  - चार्वाक (नास्तिक शिरोमणि)

→ आस्तिक परन्तु अनीश्वरवादी दर्शन → सांख्य एवं मीमांसा।

→ **भारतीय दर्शन में प्रमाण की स्थिति —**

विभिन्न दर्शन	संख्या	प्रमाण					
चार्वाक दर्शन	1	प्रत्यक्ष	×	×	×	×	×
बौद्ध + वैशेषिक	2	प्रत्यक्ष	अनुमान	×	×	×	×
जैन + सांख्य + ~~जैमिनी~~ जैमिनि (मीमांसा प्रवर्तक) + रामानुज	3	प्रत्यक्ष	अनुमान	शब्द	×	×	×
न्याय	4	प्रत्यक्ष	अनुमान	शब्द	उपमान	×	×
प्रभाकर (मीमांसक)	5	प्रत्यक्ष	अनुमान	शब्द	उपमान	अर्थापत्ति	×
कुमारिल भट्ट (मीमांसक) + शंकराचार्य (अद्वैत वेदान्त)	6	प्रत्यक्ष	अनुमान	शब्द	उपमान	अर्थापत्ति	अनुपलब्धि

Scanned with CamScanner